शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शिक्षण प्रतिमान की अवधारणा

डॉ.अमिता जैन
सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं, नागौर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

प्रतिमान शब्द का प्रयोग किसी आदर्श के रूप में और किसी वस्तु के छोटे आकार के रूप में प्रयोग किया जाता है। किसी आदर्श को सामने लाकर छात्रों को इन आदर्शों का अनुकरण द्वारा ग्रहण कराने का प्रतिमानों द्वारा प्रयास किया जाता है। शिक्षण के क्षेत्र में कुशल शैक्षिक व्यवस्था के लिए शिक्षण प्रारूप बनाये जाते हैं, जिन्हें शिक्षण प्रतिमान कहा जाता है। शिक्षण प्रतिमान शिक्षण के बारे में सोचने-विचारने, विचार-विमर्श के पश्चात् एक निश्चित व्यवस्था के अनुकूल एक रीति विधि अथवा ढंग है।

मूल शब्द : *शिक्षण प्रतिमान, त्रिआयामी आकृति, गुण*

प्रस्तावना

शिक्षण प्रतिमान सिद्धांतों के निर्माण के लिए प्राथमिक सामग्री तथा वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करते हैं। शिक्षण प्रतिमानों का प्रयोग एक शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए करता है। प्रतिमान शब्द का प्रयोग किसी आदर्श के रूप में और किसी वस्तु के छोटे आकार के रूप में प्रयोग किया जाता है। किसी आदर्श को सामने लाकर छात्रों को इन आदर्शों का अनुकरण द्वारा ग्रहण कराने का प्रतिमानों द्वारा प्रयास किया जाता है। शिक्षण के क्षेत्र में कुशल शैक्षिक व्यवस्था के लिए शिक्षण प्रारूप बनाये जाते हैं, जिन्हें शिक्षण प्रतिमान कहा जाता है।

शिक्षण प्रतिमान के अर्थ को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं :

1 गुणों को प्रदर्शित करने वाले आदर्श की ओर संकेत करता हुआ : आम व्यक्ति किसी के गुणों की तुलना किसी आदर्श से करता है तब प्रतिमान शब्द का प्रयोग करता है। जैसे दो भाई बड़ा स्नेह करते हैं, तब कहते हैं राम-भरत के मॉडल हैं आदि।

2 किसी वस्तु की त्रिआयामी आकृति : इंजीनियर किसी पुल, बांध या भवन का निर्माण करने से पूर्व छोटा रूप तैयार करता है तो यह त्रिआयामी आकृति उस पुल या भवन का मॉडल कहलाती है। हम सहायक सामग्री का उपयोग करते समय भी इसका उपयोग करते हैं। जैसे. कुतुबमीनार का मॉडल, हवाई जहाज का मॉडल आदि।

3 किसी कार्य की व्यावहारिक रूप रेखा : किसी किये जाने वाले कार्य की रूपरेखा तैयार करना। जैसे जिले के विभिन्न विद्यालयों का अवलोकन करने जाना है। इसके लिए हम जाने के कार्य तथा वहां करने वाले कार्यों की रूपरेखा को

लिखकर तैयार करेंगे। इससे विद्यालयों की अवलोकन यात्रा का मॉडल तैयार हो जाएगा।

अतः प्रतिमान किसी आदर्श के अनुरूप व्यवहार को डालने की प्रक्रिया है। शिक्षण कार्य को पूर्ण करने के लिए तैयार की गई रूपरेखा शिक्षण प्रतिमान कहलाती है।

अब हम शिक्षण प्रतिमान की कुछ परिभाषाओं पर प्रकाश डालेंगे। "जॉयस व मार्शा वील के अनुसार शिक्षण प्रतिमान वह नमूना अथवा योजना है जिसे किसी पाठ्यक्रम का निर्माण करने, अनुदेशनात्मक सामग्री का चयन करने और किसी शिक्षक की क्रियाओं का मार्गदर्शन करने के काम में लाया जाता है।" एस के मंगल के अनुसार "शिक्षण प्रतिमान से तात्पर्य उस कार्य योजना से है जिसके द्वारा एक शिक्षक को निश्चित शिक्षा उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अपने कार्य संपादन के लिए आवश्यक निर्देश और मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है।"

पोल डी.ईगन के अनुसार "शिक्षण प्रतिमानों से अभिप्राय विशिष्ट अनुदेशनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निर्मित उपचारात्मक शिक्षण व्यूह रचनाओं से है।"

शिक्षण प्रतिमान की विशेषताएं

- शिक्षण प्रतिमान शैक्षिक वातावरण पैदा करने की विधियों पर प्रकाश डालते हैं।
- यह छात्रों एवं शिक्षकों के मध्य अंतरूक्रियाको निर्देशित करते हैं।
- शिक्षक के लिए गाइड का कार्य करते हैं।
- शिक्षण प्रक्रिया में पूर्ण सुधार लाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।
- निश्चित शिक्षण सूत्रों का प्रयोग करते हैं।
- मानव योग्यता के विकास में सहायक है।
- शिक्षण को एक कला के रूप में विकसित करने में सहायक है।
- शैक्षिक क्रियाओं एवं वातावरण का निर्माण करने वाली एक रूपरेखा होती है।
- विशिष्ट शिक्षण एवं अधिगम विधियों के निर्माण में सहायक होते हैं।
- तथ्यों का सुव्यवस्थित रूप है।
- शिक्षण प्रक्रिया में सुधार लाने में सक्षम होते हैं।

शिक्षण प्रतिमान के तत्व

लक्ष्य (Goal) - कुछ विद्वान इसे केंद्रबिंदु (Focus) कहते हैं। चूंकि सभी शिक्षण प्रतिमानों में शिक्षक एवं छात्र की समस्त क्रियाएं इसी लक्ष्य या उद्देश्य या केंद्र बिंदु की प्राप्ति पर केंद्रित रहती है। इसलिए इसे लक्ष्य कहा जाता है।

संरचना (Syntax) -. इसमें शिक्षण सोपानों की व्याख्या की जाती है तथा शिक्षण क्रियाओं की व्यवस्था क्रम का निर्धारण किया जाता है ताकि अधिगम की परिस्थितियां उत्पन्न की जा सके और शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके।

सामाजिक प्रणाली (Social system) -. इसमें शिक्षक एवं छात्र की क्रियाएं और उनके परस्पर संबंधों का विवरण दिया जाता है। एक प्रतिमान से दूसरे प्रतिमान में शिक्षक का कार्य भिन्न-भिन्न होता है। किसी प्रतिमान में शिक्षक समूह क्रियाकी सुविधाएं उपलब्ध कराने वाला होता है। दूसरे में किसी छात्र विशेष का परामर्शदाता और अन्य में कार्य देने वाला। किसी प्रतिमान में शिक्षक क्रिया के मध्य मेंए सूचना का स्रोत व्यवस्थापक और परिस्थिति को गति देने वाला होता है। कुछ प्रतिमानों में शिक्षक और छात्रों के

मध्य समान रूप से क्रियाएं बंटी रहती है। कुछ प्रतिमानों में छात्र केंद्र में होता है।

प्रतिक्रिया सिद्धांत (Principles of reaction) - इसमें शिक्षक की उन क्रियाओं का निर्धारण किया जाता है, जिसमें शिक्षक की क्रिया के प्रतिफल छात्र क्या प्रतिक्रिया करते हैं और उनका स्वरूप क्या है ?

सहायक प्रणाली (Support system) - इसमें शिक्षक को अपनी सामान्य क्षमताओं, कौशलों तथा सामान्य रूप से कक्षा कक्ष में जो भी साधन उपलब्ध होते हैं, उनके अतिरिक्त किसी शिक्षण प्रतिमान विशेष का प्रयोग करने हेतु विशेष सहायता की आवश्यकता होती है। जैसे. स्लाइड, मॉडल, चार्ट आदि।

उपयोग (Application) - शिक्षण प्रतिमान का शिक्षण में किस स्थिति एवं किस रूप में प्रयोग किया जा सकता है, इसका ज्ञान भी शिक्षक को अवश्य होना चाहिए। क्योंकि कुछ प्रतिमान लघु पाठों के शिक्षण हेतुए तो कुछ बड़े पाठों या छोटे बड़े दोनों तरह के पाठों के शिक्षण में उपयोग में लाए जा सकते हैं।

शिक्षण प्रतिमान के स्रोत

सामाजिक अंत:क्रिया स्रोत - सामाजिक संबंध शिक्षा का वाहक होता है, इसलिए शिक्षण इससे दूर नहीं रह सकता। बालक समाज में पैदा होता है और सामाजिक संबंधों से विकसित होता है, इसलिए उसका संपूर्ण शिक्षण कार्य उन्हीं सामाजिक संबंधों से जुड़ा हुआ है। यह स्रोत प्रजातांत्रिक शिक्षण प्रतिमान को विकसित करने में मदद करता है।

सूचना प्रक्रिया स्रोत - इस प्रकार के स्रोत बालक में सृजनात्मक मानसिकता का विकास करते हैं, जिससे बालक समस्या समाधान करने में अपने आप को सक्षम, योग्य एवं दक्ष बनाने का प्रयास करता है। एक प्रकार से इसके माध्यम से बालक अपने आप में सामान्य बौद्धिक क्षमता का विकास करता है।

व्यक्तिगत स्रोत - इसमें व्यक्तिगत ढंग से बालक का पुनर्बोध किया जाता है। इसके द्वारा बालक की क्षमता का विकास कराया जाता है, जिसके माध्यम से बालक अपने में वास्तविकए रचनात्मक एवं संगठनात्मक मानसिकता को विकसित कर सके। अतः बालक के व्यक्तिगत एवं संवेगात्मक जीवन को वातावरण से समायोजन अथवा संबंध स्थापित करने का प्रयास किया जाता है।

व्यवहार परिवर्तन स्रोत - इसके प्रणेता बी.एफ.स्कीनर हैं, जिन्होंने शिक्षण अधिगम के नए सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इसके अंतर्गत बालक के व्यवहार का परिवर्तन करने में पुनर्बलन को आधार बनाया जाता है। ये प्रतिमान पूर्णत: मनोवैज्ञानिक आधार पर बनाए जाते हैं। इसका उपयोग शिक्षण व्यूह रचना में अधिक किया जाता है। यह नवीनतम शिक्षण स्रोत कहा जा सकता है।

शिक्षण प्रतिमान के कार्य

मार्ग निर्देशन - शिक्षण प्रतिमान का सर्वप्रथम कार्य यह है कि शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को शिक्षण उद्देश्य की प्राप्ति कराना। उद्देश्य प्राप्त करने के लिए क्याए कैसे क्यों आदि के लिए मार्ग निर्देशन करना। साथ-साथ शिक्षण को वैज्ञानिक, नियंत्रित एवं उद्देश्य उन्मुख क्रियाओंकी तरफ बढ़ाना है।

पाठ्यक्रम का विकास करना - विभिन्न कक्षाओं के विभिन्न विषयों के लिए पाठ्यक्रम का विकास करना, जिसके आधार पर शिक्षण को क्रियान्वित किया जाता है।

अनुदेशनात्मक सामग्री का विशिष्टीकरण - जब शिक्षक द्वारा पाठ्यक्रम का निर्माण एवं निर्धारण कर लिया जाता है तो उसी के अनुसार उसे सहायक सामग्री का नियोजन करना पड़ता है तथा उसका यथास्थान पर अनुपालन करना। जिससे बालक के व्यक्तित्व में वांछित परिवर्तन आ सके।

शिक्षण में विकास करना - उक्त कार्यों के संपादन होने के साथ-साथ शिक्षण प्रतिमान शिक्षण अधिगम को प्रभावी, रूचिकर, आकर्षक एवं उपयोगी बनाने में मदद करता है।

शिक्षण उद्देश्य की प्राप्ति - शिक्षण प्रतिमान का प्रमुख कार्य यह होता है कि वह जिस उद्देश्य के लिए किया जा रहा है, उसमें इसे कितनी उपलब्धता प्राप्त हुई अथवा बालक के व्यवहार में किस सीमा तक परिवर्तन हुआ।

निष्कर्ष

शिक्षण प्रतिमान गुणों को प्रदर्शित करने वाले आदर्श की ओर संकेत करता है। शिक्षण प्रतिमान शैक्षिक वातावरण पैदा करने की विधियों पर प्रकाश डालता हैं। किसी वस्तु की त्रिआयामी आकृति को प्रदर्शित करता है। शिक्षण प्रतिमान छात्रों एवं शिक्षकों के मध्य अंत:क्रिया को निर्देशित करते हैं। शिक्षक के लिए गाइड का कार्य करते हैं। यह तथ्यों का सुव्यवस्थित रूप है।

संदर्भ ग्रंथ

1 द्विवेदी, रोली (2018), ज्ञान एवं पाठ्यक्रम, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा 2

2 सिंह कर्ण (2008) शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर खीरी

3 पुरोहित, जगदीश नारायण (2007) शिक्षण के लिए आयोजन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर

4 कथूरिया, आर.पी. एवं दवे रमेश (2005) शिक्षण प्रतिमान, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

5 कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2005) शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2